# औषधीय कीट भंवरी और वनौषधियों की सहायता से होती हैं मृगी(अपस्मार) की चिकित्सा

### * 55 विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान
### * 90 से अधिक प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग

छत्तीसगढ़ मे वनौषधियों एवं कीटों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान के दस्तावेजीकरण मे जुटे वनौषधि विशेषज्ञ पंकज अवधिया ने खुलासा किया है कि राज्य के पारंपरिक चिकित्सक 90 प्रकार की वनौषधियों का प्रयोग मृगी (अपस्मार) की चिकित्सा मे करते है। इनमे से अधिकत्तर वनौषधियाँ सुगंध युक्त है। इसके अलावा कई तरह के औषधीय कीटों का प्रयोग बाहरी और आंतरिक तौर होता है। सर्वेक्षणों के माध्यम से अब तक 55 विशेषज्ञ पारंपरिक चिकित्सकों की पहचान की जा चुकी है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में किये जा रहे इथनोबॉटेनिकल सर्वेक्षणों के हवाले से पंकज अवधिया ने बताया कि पानी में चक्कर खाने वाले विशेष कीट भंवरे (वाटर स्ट्राइडर) का प्रयोग मृगी की चिकित्सा मे होता है। इस कीड़े को गुड़ के साथ मिलाकर गोलियों के रुप मे रोगियों को दिया जाता है। राज्य के बागबहरा क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सकों के बीच यह उपयोग लोकप्रिय है। वनौषधियों मे बच का प्रयोग सामान्यतौर पर होता है। मृगी की चिकित्सा मे बच का प्रयोग प्राचीन चिकित्सकीय ग्रंथों मे भी वर्णित है पर राज्य के पारंपरिक चिकित्सक बच की दुर्लभ जाति एकोरस ग्रेमिनियस का प्रयोग करते है। इसका पौधा बच (एकोरस केलामस) के पौधे की तरह ही होता है पर पत्तियों मे मध्य शिरा का अभाव होता है। इस दुर्लभ जाति की बच बहुत कम स्थानों मे मिलती है। इसका आंतरिक और बाहरी दोनो ही तरीकों से प्रयोग होता है। उत्तरी छत्तीसगढ़ के पारंपरिक चिकित्सकों के बीच निंगुण्डी नामक वनौषधि का प्रयोग लोकप्रिय है। निंगुण्डी की लकड़ी से बने छोटे जूते मृगी के रोगियों को लंबे समय तक पहनने की सलाह दी जाती है। इन जूतों का उपयोग मुख्य उपचार के साथ सहायक उपचार के रुप मे किया जाता है। राज्य के दक्षिणी भागों के पारंपरिक चिकित्सक महुआ के पौध भागों का प्रयोग करते है। महुआ के पौध भागों का प्रयोग अन्य वनौषधियों के साथ मृगी के दौरे के समय किया जाता है। राज्य के बहुत से भागों मे विभिन खरपतवारों की जड़ों से बने ताबीज और माला धारण करने का प्रचलन है। पारंपरिक चिकित्सकों का मानना है कि शरीर के संपर्क मे रहने पर ये पौध भाग रोगियों को विशेष राहत पहुँचाते है। इन ताबीजों और माला को तैयार करने मे प्रयोग होने वाले विभिन रंगों के धागे भी चिकित्सा मे अहम भूमिका निभाते है। पारंपरिक चिकित्सक मृगी के उपचार के लिये रोगियों के लिये विशेष दिनचर्या बनाते है और रोगियो को इसके पालन की सक्त हिदायते दी जाती है। इस दिनचर्या मे रोगियों को दिन के कुछ घंटे विशेष वृक्षों की छांव में बिताने होते है। इसके अलावा विभिन्न वनौषधियों के पास से एकत्र की गई मिट्टी का प्रयोग भी लेप के रुप में किया जाता है। सतावर, काली मूसली, काली हल्दी, पुटकंद आदि वनौषधियों की सहायता से तैयार किये गये 80 से अधिक औषधीय तेल भी प्रचलन में है।

पंकज अवधिया ने आगे बताया कि मृगी की समस्या पूरे विश्व मे है और अभी तक इसकी सफल चिकित्सा की आदर्श दवा का विकास नही हो पाया है। इन परिस्थितियों मे छत्तीसगढ़ मे वनौषधियों से संबंधित पारंपरिक ज्ञान आधुनिक शोधकर्ताओं के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इस दिशा मे किया गया अविलंब प्रयास लाखों रोगियों को राहत पहुंचा सकता है।